Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

BHDC-102

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

Question Paper–June-2024 (Solved) 1
Question Paper–December-2023 (Solved) 1
Question Paper–June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper–December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	नवजागरण और स्वाधीनता आन्दोलन	1
2.	आधुनिक हिंदी साहित्य का आरंभ और भारतेंदु युग	13
3.	द्विवेदी युग	26
4.	छायावाद	38
5.	उत्तरछायावाद	50
6.	प्रगतिशील काव्य	60
7.	प्रयोगवाद एवं नयी कविता	70

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. समकालीन हिंदी काव्य 82

9. कथा साहित्य - I (कहानी) 91

10. कथा साहित्य - II (उपन्यास) 102

11. नाट्य साहित्य और रंगमंच 114

12. निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं 131

13. हिंदी आलोचना का विकास 140

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) BHDC-102

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

***नोट :** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. खड़ी बोली गद्य के विकास का परिचय दीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'खड़ी बोली का गद्य'

प्रश्न 2. द्विवेदीयुगीन राजनैतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ-26, 'राजनीतिक पृष्ठभूमि', पृष्ठ-27, 'सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि'

प्रश्न 3. छायावाद की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-38, 'छायावाद की पृष्ठभूमि'

प्रश्न 4. उत्तर-छायावादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ-51, 'उत्तर-छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ'

प्रश्न 5. प्रगतिशील काव्यधारा का विशेषताएँ बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ-62, 'प्रगतिशील काव्यधारा की विशेषताएं'

प्रश्न 6. नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-73, 'नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ'

प्रश्न 7. समकालीन हिंदी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-8, पृष्ठ-83, 'प्रमुख प्रवृत्तियाँ'

प्रश्न 8. नई कहानी के स्वरूप और विकास का विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ-93, 'नई कहानी'

प्रश्न 9. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए

(क) जयशंकर प्रसाद

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-41, 'जयशंकर प्रसाद'

(ख) प्रगतिवाद की देन

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ-63, 'प्रगतिवाद की देन'

(ग) समस्या नाटक

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-11, पृष्ठ-116, 'समस्या नाटक'

(घ) छायावादी काव्य की भाषा

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-40, 'काव्य-भाषा'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल) **BHDC-102**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. नवजागरण के उदय की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'नवजागरण के उदय की परिस्थितियां'

प्रश्न 2. द्विवेदी युग के गद्य साहित्यकारों का परिचय दीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ-27, 'गद्य साहित्यकार'

प्रश्न 3. छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-39, 'छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियां'

प्रश्न 4. उत्तर-छायावादी काव्य की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ-51, 'उत्तर-छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ'

प्रश्न 5. प्रमुख प्रगतिवादी कवियों का परिचय प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ-61, 'प्रगतिवाद के प्रमुख कवि'

प्रश्न 6. नयी कविता की पृष्ठभूमि का विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-7, पृष्ठ-72, 'नयी कविता की पृष्ठभूमि'

प्रश्न 7. समकालीन हिन्दी कविता की भाषागत विशिष्टताएँ बताइए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-8, पृष्ठ-85, 'समकालीन हिंदी कविता की भाषा'

प्रश्न 8. 'प्रसादयुगीन हिन्दी नाटक' पर निबंध लिखिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-11, पृष्ठ-115, 'प्रसाद युगीन हिंदी नाटक'

प्रश्न 9. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए

(क) साठोत्तरी कहानी

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ-93, 'साठोत्तरी कहानी'

(ख) अंग्रेजों की शिक्षा नीति

उत्तर भारतीयों का समर्थन प्राप्त करने के लिए ईसाई मिशनरियों ने कुछ हद तक सफलता पाई, लेकिन मिशनरियों के काम की नकारात्मक प्रतिक्रिया भी हुई और भारतीयों के एब बड़े हिस्से में अपने धर्म और अपनी परंपरा के प्रति आस्था और अधिक सुदृढ़ हुई। तब अंग्रेजों ने भारतीयों को अपना अधीनस्थ बनाने के लिए शिक्षा को हथियार बनाया।

इसे भी देखें संदर्भ अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 3

(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, प्रश्न 3 एवं प्रश्न 5

(घ) जीवनी और आत्मकथा

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-12, पृष्ठ-133, 'जीवनी-आत्मकथा'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

नवजागरण और स्वाधीनता आन्दोलन

1

परिचय

हिंदी साहित्य के मध्यकाल तक वीरगाथा, भक्ति और शृंगार संबंधी साहित्य की अधिक रचना हुई, लेकिन हम आधुनिक युग में साहित्य का स्वरूप काफी कुछ बदल गया। आधुनिक हिंदी साहित्य को समझने के लिए आधुनिक काल की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। आधुनिक युग की शुरुआत भारत में उन्नीसवीं सदी से मानी जाती है। भारत में यूरोपीय जातियों का आगमन काफी पहले शुरू हो गया था, लेकिन उन्होंने अठारहवीं सदी में अपने पैर जमाए और विस्तार किया। 1757 ई. में प्लासी के युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला की हार के साथ भारत पर अंग्रेजों का राजनीतिक अधिकार होने लगा था, जो अगले सौ साल तक चला और अंग्रेजों ने भारत के लगभग सभी राज्यों को अपने अधीन कर लिया। 1857 ई. में अंग्रेजों विरुद्ध उन्हीं के अधीन काम करने वाले भारतीय सैनिकों ने विद्रोह किया। 1857 के विद्रोह में मिली असफलता ने भारतीयों को अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के तरीके बदलने हेतु सोचने पर विवश किया। कांग्रेस की स्थापना हुई और अंग्रेजी पराधीनता के विरुद्ध भारतीयों का संघर्ष तेज हो गया। अंततः 1947 में देश को स्वतंत्रता मिली, किंतु देश भारत और पाकिस्तान–दो भागों में विभाजित हो गया।

अंग्रेजों ने भारत को राजनीतिक के साथ मानसिक रूप से भी गुलाम बनाने के लिए उन्हें पिछड़े होने का अहसास करवाया। इन्हीं स्थितियों ने नवजागरण की नींव रखी। नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, जिससे आधुनिक हिंदी साहित्य पर भी नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन दोनों का प्रभाव पड़ा।

भारतीय नवजागरण और साहित्य पर उसके प्रभाव को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों, नवजागरण के उदय के कारणों, भारतीय नवजागरण की सामान्य विशेषताओं आदि को समझना आवश्यक है।

अध्याय का विहंगावलोकन

नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि

एक राष्ट्र के रूप में भारत का उदय आधुनिक युग में माना जा सकता है, लेकिन भौगोलिक दृष्टि से भारत एक इकाई के रूप में प्राचीन काल से मौजूद रहा है। यहाँ बाहर से विभिन्न जातियों का आवागमन निरंतर होता रहा है। इतिहासकार मानते हैं कि ईसा के तीन हजार से डेढ़ हजार साल पहले के दौर में मध्य एशिया से आए लोगों को आर्य कहा गया और वे सबसे पुराने ज्ञात समूह थे, जो इस धरती पर बसे। आर्यों के आगमन के बाद शक, हूण, यवन, मंगोल आदि आए और यहाँ की संस्कृति में घुल-मिल गए। इन जातियों ने घुलने-मिलने की प्रक्रिया में एक-दूसरे से काफी कुछ लिया और दिया, लेकिन यूरोप से आने वाली जातियों का उद्देश्य व्यापर करना मात्र था। पहले वे लोग तैयार कपड़ा और दूसरी वस्तुएं वे यूरोप में बेचते थे, किंतु औद्योगिक क्रांति के बाद वे यहाँ से कच्चा माल निर्यात करने लगे और वहाँ के कारखानों में बना माल यहाँ बेचने लगे। भारत में व्यापार के इरादे से अंग्रेज, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और डच आए। इन सबमें अंग्रेजों ने लगभग पूरे भारत पर अधिकार कर लिया और भारत को अपना उपनिवेश बनाने में कामयाब रहे। 1857 तक इस कंपनी का शासन लगभग पूरे भारत पर हो गया था, जो रियासतें सीधे अंग्रेजों के अधीन नहीं थीं, उनके साथ भी अंग्रेजों ने अपने हित में अनेक तरह के समझौते कर रखे थे। दिल्ली पर अब भी मुगल बादशाह का शासन था, लेकिन उनके पास वास्तविक सत्ता नहीं थी।

भारत पर अंग्रेजी साम्राज्य की नींव 1757 ई. में प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला के परास्त होने के बाद पड़ी। अंग्रेजों ने अपने को राजनीतिक और प्रशासनिक रूप से भी मजबूत बनाना शुरू कर दिया। इसके लिए उन्होंने अपने देश का प्रशासनिक ढाँचा यहाँ स्थापित किया और यहाँ की प्रशासनिक संरचना को तोड़ने के लिए

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

रोजगार और सामाजिक संस्थाओं को समाप्त कर नई संस्थाएं थोपी गईं। विदेश में बने माल को बेचने के लिए भारत के परंपरागत उद्योग-धंधों को नष्ट किया गया। किसानों को अपने लिए लाभकारी पैदावार करने के लिए विवश किया।

ईसाई मिशनरियों ने ईसाई धर्म का प्रचार करना शुरू किया और यह साबित करने की कोशिश की कि ईसाई धर्म महान है और भारतीय धर्म इसकी तुलना में पिछड़े हुए हैं। उन्होंने गरीबों, दलितों और आदिवासियों भौतिक सुविधाएं उपलब्ध कराकर अपने धर्म का प्रचार करने के साथ भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों की तीखी आलोचना की। जातिप्रथा, मूर्ति पूजा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, वैधव्य आदि सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों का विरोध कर लोगों को जागृत करने का काम किया। ईसाई मिशनरियों ने अपने विचारों और अपने धर्म का प्रचार करने के लिए भारतीय भाषाओं में पुस्तकें लिखीं। प्राचीन भारतीय पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इसका यह लाभ हुआ कि शेष विश्व भारत के प्राचीन इतिहास, धर्म, दर्शन और संस्कृति के बारे में जान पाया।

ईसाई मिशनरियों ने भारतीयों के बीच हीन भावना पैदा करने की कोशिश की, लेकिन कुछ लोगों ने उनकी आलोचना को स्वीकार नहीं किया और यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि हम भले ही आज परतंत्र हों लेकिन हमारा अतीत स्वर्णिम था। धर्म और अध्यात्म में हम सदा दूसरों से श्रेष्ठतर रहे हैं। इन दो प्रवृत्तियों ने जिस आंदोलन की शुरुआत की उसे ही नवजागरण कहा गया। नवजागरण के आंदोलन में दो प्रवृत्तियाँ थीं। एक, जो यह मानते थे कि भारत सदैव से महान रहा है और भारत के अतीत में वह सब कुछ है। इस प्रवृत्ति को पुनरुत्थानवाद के नाम से जाना जाता है। दूसरी, कुछ लोग यह मानते थे कि भारत में बहुत-सी गलत बातें हैं, जिनको छोड़ने से ही हम प्रगति भी कर सकते हैं और स्वतंत्र हो सकते हैं, इसको पुनर्जागरण के नाम से जाना गया। इस दूसरी प्रवृत्ति ने ही आधुनिकता को एक मूल्य के रूप में जरूरी समझा और लोकतंत्र, समानता और बंधुत्व के दर्शन से भारतीयों को परिचित कराया। इसी ने भारत में नवजागरण और स्वाधीनता के आंदोलन पृष्ठभूमि तैयार की।

नवजागरण के उदय की परिस्थितियाँ

भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों का आगमन सोलहवीं सदी में हो गया था, लेकिन राजनीतिक रूप से उनका प्रभाव 18वीं सदी में तेजी से बढ़ा। मुगल साम्राज्य भी 18वीं सदी तक आते-आते समाप्त हो गया था। प्लासी के युद्ध के बाद अन्य यूरोपीय जातियों की तुलना में अंग्रेजों के प्रभुत्व एवं क्षेत्र का विस्तार तेजी से हुआ और अंग्रेजों को अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए क्षेत्रीय शासकों से संघर्ष करना पड़ रहा था। ये क्षेत्रीय शासक आपस में भी लड़ते थे। अंग्रेजों ने इन आपसी लड़ाइयों का फायदा पूरी तरह से उठाया।

भारतीयों का समर्थन प्राप्त करने के लिए ईसाई मिशनरियों ने कुछ हद तक सफलता पाई, लेकिन मिशनरियों के काम की नकारात्मक प्रतिक्रिया भी हुई और भारतीयों के एक बड़े हिस्से में अपने धर्म और अपनी परंपरा के प्रति आस्था और अधिक सुदृढ़ हुई। तब अंग्रेजों ने भारतीयों को अपना अधीनस्थ बनाने के लिए शिक्षा को हथियार बनाया। मैकाले भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना चाहता था, जो हमारे और उन लाखों लोगों के बीच जिन पर हम शासन करते हैं, दुभाषिये का काम कर सके, ऐसे लोगों का एक वर्ग जिनका रक्त और रंग भारतीय हो, किंतु जो रुचि, विचारों, नैतिकता और बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हों। हालांकि मैकाले और उनके साथी अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारतीयों में जिस रूपांतरण की आशा कर रहे थे, वैसा कुछ घटित नहीं हुआ। शिक्षा की नई प्रणाली अपने उद्देश्य के विपरीत एक ऐसे आंदोलन के बीज बो रही थी, जिसने अंततः ब्रिटिश शासन ही समाप्त हो गया।

अंग्रेजी राज्य के विस्तार और शासन सुदृढ़ होने के साथ भारत की जनता से टकराव भी बढ़ता गया। नई भूमि व्यवस्था इंग्लैंड और यूरोप के बने मालों को बेचने के लिए यहाँ के उद्योगों को निर्मूल करने की कोशिश, भारत के हिंदुओं और मुसलमानों के विश्वासों और मान्यताओं को अपमानित करने की कोशिशों ने जनता में असंतोष पैदा किया और 1857 के विद्रोह के लिए जमीन तैयार की। लेकिन अंग्रेजों के संपर्क में आने के कारण भारतीय शिक्षित वर्ग भी भारतीयों को अंग्रेजों की तुलना में पिछड़ा मानने लगे। भारत के प्राचीन दर्शन, धर्म और परंपरा का भी अच्छा खासा ज्ञान रखने वाले और पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने वाले लोगों ने आधुनिक विवेकवादी और मानवतावादी दृष्टि से सामंती प्रथाओं और रीति-रिवाजों की आलोचना की और समझया कि प्रगति में बाधक रीति-रिवाजों और रूढ़ियों को छोड़ना होगा।

1757 के बाद अंग्रेजों ने अपने शासन की सुदृढ़ता के साथ विभिन्न रियासतों में बंटे भारत को एक राजनीतिक इकाई में समेटना शुरू किया। यह सामंती भारत के आधुनिक भारत बनने की प्रक्रिया की शुरुआत थी। हालांकि राष्ट्र बनने की यह प्रक्रिया औपनेविशिक शासन के अधीन घटित हो रही थी, लेकिन इसने भारतीयों में इस बात का एहसास करवाया कि वे एक राष्ट्र के नागरिक हैं। यह एहसास अंग्रेजी शिक्षा हासिल करने वाले मध्यवर्ग में सबसे पहले प्रकट होना शुरू हुआ। इन्होंने भारत की तुलना ब्रिटेन के शैक्षिक संस्थानों, उद्योगों, प्रशासनिक संस्थानों, राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन करके भारत को आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ, सामाजिक रूप से रूढ़िवादी और राजनीतिक रूप से बिखरा हुआ घोषित करने की कोशिश की।

भारतीय नवजागरण

रिनेसां की चेतना जिस प्रकार यूरोप में एनलाइटेनमेंट काल में अपने प्रफुल्ल रूप में दृष्टिगोचर होती है, उसी प्रकार से पंद्रहवीं शताब्दी की चेतना उन्नीसवीं शताब्दी में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना और ज्ञान-विज्ञान के प्रसार में अपने विकसित रूप में दृष्टिगोचर होती है।

भारत में यह चेतना हर जगह हर समाज में अलग-अलग वक्त पर आयी, किन्तु सबका उद्देश्य सुधार ही लाना था। रेल, तार, डाक

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

का जाल बिछाना, प्रेस खोलना, अंग्रेजी शिक्षा का नींव डालना और फोर्ट विलियम कॉलेज बनवाना सब अंग्रेजों ने अपने हित के लिए ही किया, पर इससे नवजागरण का विकास भी भारत में हुआ।

भारतीय नवजागरण की शुरुआत बंगाल से हुई थी। बंगाल में जमींदार परिवार में जन्मे राजा राममोहन राय (1772-1833) इसके प्रवर्तक माने जाते हैं। राजा राममोहन राय ने 1828 में बंगाल में ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। इन संस्थानों ने शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध जागृति लाने का महत्त्वपूर्ण काम इन समाज सुधारकों ने किया। राजा राममोहन राय के प्रयासों से सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा। ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से विधवा विवाह को कानूनी स्वीकृति मिली।

नवजागरण के अग्रदूतों ने शिक्षा, विशेष रूप से आधुनिक शिक्षा का प्रचार किया। इसके लिए कॉलेज और स्कूल खोले गए। उन्होंने स्त्रियों को मुक्त कराने के लिए उन्हें शिक्षित बनाने पर बल दिया। महात्मा फुले का संबंध जिस जाति से था, उसे हिंदू समाज में पिछड़ी जाति माना जाता था। उन्होंने सबसे पहले अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले को शिक्षा प्रदान की और फिर अपनी पत्नी की मदद से दलित वर्ग की लड़कियों को शिक्षित करने का कार्य किया। महात्मा फुले ने जातिप्रथा, बाल विवाह और अनमेल विवाह जैसी कई बुराइयों को खत्म करने के लिए प्रयास किए।

नवजागरण के दौरान कई पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित करके लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे अपने और समाज के बारे में तर्क और बुद्धि के अनुसार विचार करें। नवजागरण आंदोलन के कारण उत्पन्न नवीन चेतना ने साहित्य पर भी गहरा असर डाला। इस दौर के लेखकों ने भारत की आधुनिक भाषाओं में नवजागरण के दौर के सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों को अपने साहित्य का विषय बनाया।

हिंदी नवजागरण

हिंदी नवजागरण से अभिप्राय सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत के हिंदी प्रदेशों में आये राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण से है। हिंदी नवजागरण की सबसे प्रमुख विशेषता हिंदी-प्रदेश की जनता में स्वातंत्र्य-चेतना का जागृत होना है। इसका पहला चरण स्वयं 1857 का विद्रोह था। इसका दूसरा चरण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से शुरू हुआ और तीसरा चरण महावीर प्रसाद द्विवेदी से शुरू हुआ।

स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास

1857 तक लगभग पूरे हिंदुस्तान पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अधिकार हो गया था। अंग्रेजों को लगातार भारतीय प्रतिरोध का सामना भी करना पड़ा। विभिन्न राज्यों के शासकों, आदिवासियों, किसानों और दूसरे लोगों ने अंग्रेजी शासकों का प्रतिरोध किया। इन विद्रोहों की परिणति 1857 के महाविद्रोह में हुई, जब स्वयं ईस्ट इंडिया कंपनी के भारतीय सैनिकों ने ही अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया । इस विद्रोह का प्रारम्भ भारतीय सिपाहियों ने 11 मई 1857 को मेरठ से किया और अंग्रेज अफसरों और उनके वफादार सैनिकों को परास्त कर दिल्ली की तरफ कूच किया और दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को भारतीय सिपाहियों ने भारत का शासक घोषित कर अंग्रेजों को पूरे भारत से खदेड़ने का अभियान चलाया।

इस विद्रोह के बाद 1857 में भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी की अपेक्षा अंग्रेजी सत्ता के अधीन आ गया। 1857 के महाविद्रोह के बाद भी भारत की जनता विशेष रूप से किसान और आदिवासी अंग्रेजों के विरुद्ध अपना संघर्ष चलाते रहे।

भारत में अंग्रेजों के शासन के दौरान सीमित रूप में उद्योगीकरण की शुरुआत हुई। लार्ड मैकाले नई शासन व्यवस्था से उत्पन्न अंग्रेजी शिक्षा नए मध्यवर्ग से उम्मीद की थी कि वह अंग्रेजी सत्ता का समर्थक होगा। यह वर्ग अंग्रेजी सत्ता का समर्थक तो था, लेकिन वह अंग्रेजी सत्ता से भारतीयों के प्रति बेहतर व्यवहार की उम्मीद करता था और अधिक स्वतंत्रता की आकांक्षा रखता था। 1885 में कांग्रेस नामक राजनीतिक संगठन की स्थापना की गई, जो अंग्रेजी सत्ता का समर्थक तो था, लेकिन जो भारतीयों की तरफ से अधिक अधिकारों की माँग के लिए बनाया गया था। कांग्रेस ने लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों के लिए आंदोलन करने का रास्ता अपनाया।

1908 में पहली अपनी माँगों के लिए मजदूरों ने हड़ताल का सहारा लिया। दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैयबजी, गोपालकृष्ण गोखले आदि नेताओं को नरमदल का नेता माना जाता था और बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, विपनचंद्र पाल आदि नेताओं को गरम दल के रूप में जाना जाता था। इन नेताओं ने जन आंदोलनों का तरीका अपनाया।

रूस में हुई बोल्शेविक क्रांति के प्रभाव से समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करना भारत के युवाओं का स्वप्न बन गया। नई पीढ़ी यह समझ गई थी कि व्यापक जन आंदोलन के साथ केवल अहिंसक रास्तों से ही अंग्रेजों को सत्ता से नहीं हटाया जा सकता। यह भावना 1919 में जलियाँवाला बाग काण्ड से और तीव्र हो गई। 1920-30 के दशकों में भारत में अंग्रेजी हिंसा का प्रतिरोध करने के लिए रामप्रसाद बिस्मिल, असफाकुल्लाह, चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि के नेतृत्व में कई क्रांतिकारी संगठन अस्तित्व में आए और उन्होंने अंग्रेजी दमन का मुकाबला किया।

कांग्रेस में समाजवादियों, क्रांतिकारी संगठनों और कम्युनिस्ट पार्टी के अस्तित्व में आने कांग्रेस ने 1930 में पूर्ण आजादी की माँग रखी। जनता को इस बात का विश्वास दिलाया गया कि आजाद भारत में जमींदारी प्रथा खत्म कर दी जाएगी और भूमि सुधार को

www.neerajbooks.com

अमली जामा पहनाया जाएगा। लेकिन आजादी के इस चरण में दो महत्त्वपूर्ण मुद्दे–जाति और धर्म उभरकर आए। नवजागरण के दौरान जातिवाद के विरोध में चलाए गए आंदोलनों, अंग्रेजों की जातिवाद विरोधी नीतियों और स्वयं दलित वर्ग में उभर रहे मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों ने इस बात को उठाया कि आजादी के बाद निम्न समझी जाने वाली जातियों का क्या स्तर होगा। अंग्रेजी सत्ता ने इस मुद्दे का राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश की। 1932 में अंग्रेजों ने दलित जातियों के लिए अलग निर्वाचन मंडलों की व्यवस्था की। कांग्रेस ने इसका विरोध किया। इस मसले को लेकर गांधी जी उपवास पर बैठ गए। अंत में इस विषय में गांधी जी और बाबा साहब अंबेडकर के बीच पुणे में एक समझौता हुआ, जिसे पूना पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इस घटना के बाद से दलित जातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रयत्न करना एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन गया।

1857 की लड़ाई हिंदुओं और मुसलमानों ने मिलकर लड़ी थी। अत: अंग्रेजों ने इन दोनों समुदायों के बीच फूट डालने की हर संभव कोशिश की और वे कामयाब भी हुए। अंग्रेजों ने यह भ्रम पैदा किया कि आजादी के बाद कांग्रेस का शासन हुआ तो मुसलमानों के साथ बराबरी का व्यवहार नहीं किया जाएगा, क्योंकि कांग्रेस हिंदुओं की पार्टी है और जमींदारी प्रथा समाप्त होने से मुस्लिम जमींदारों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मुस्लिम लीग ने इसी समझ के तहत मुसलमानों के लिए अलग राज्य की माँग की। दोनों तरफ के सांप्रदायिक संगठनों ने जनता के बीच सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ाने में मदद की। इन बढ़ती दूरियों के कारण ही 1947 में देश आजाद हुआ, लेकिन धर्म के आधार पर उसका विभाजन भी हो गया।

स्वाधीनता आंदोलन की परिणति

15 अगस्त 1947 को औपनिवेशिक दासता से मुक्त होने के साथ ही एक नया देश पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया। विभाजन ने लाखों लोगों को विस्थापित होने के लिए मजबूर कर दिया और दंगों में हजारों लोग मारे गये। भारत के नए संविधान में सभी भारतीय नागरिकों को यह वचन दिया कि उनके साथ धर्म, जाति, नस्ल, लिंग, भाषा आदि के आधार पर किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा। आजाद भारत में दलितों, आदिवासियों और अन्य पिछड़े समूहों के विकास के लिए विशेष कदम उठाए गए।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय नवजागरण की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं–

(क) पुनरुत्थानवाद और सामंतवाद
(ख) पुनर्जागरण और लोकतंत्र
(ग) पुनरुत्थानवाद और पुनर्जागरण
(घ) सामंतवाद और पूँजीवाद

उत्तर–(ग) पुनरुत्थानवाद और पुनर्जागरण।

प्रश्न 2. इनमें से कौन-सा भारतीय नवजागरण के उदय का कारण नहीं है?

(क) अंग्रेजों का आगमन
(ख) कांग्रेस की स्थापना
(ग) ईसाई मिशनरियों का प्रचार
(घ) आधुनिकता शिक्षा का विस्तार

उत्तर–(ख) कांग्रेस की स्थापना।

प्रश्न 3. मैकाले भारत में अंग्रेजी शिक्षा क्यों फैलाना चाहता था?

उत्तर–लार्ड मैकाले एक महान दूरगामी शासक था, लेकिन वह इस बात को समझता था कि विश्व को यदि किसी देश से चुनौती मिल सकती है, तो वह है भारत। इसलिए अंग्रेज शासकों ने भारतीय हिंदू-मुस्लिम पहचान को समाप्त करने की एक दूरगामी योजना बनाई। वह दूरगामी योजना थी शिक्षा। लार्ड मैकाले द्वारा 1934 में जो शिक्षा पद्धति अपनाई गई, वह इसी योजना का एक अंग था। इस शिक्षा पद्धति के बारे में स्वयं मैकाले ने कहा था कि जो शिक्षा पद्धति में लागू कर रहा हूँ। उसके पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ के शिक्षित युवक देखने में हिंदुस्तानी लगेंगे, किंतु उनका मस्तिष्क अंग्रेजियत से भरा होगा।

इस योजना में उसे सफलता भी मिली, आज भी हम सभ्य कहे जाने वाले समाज में अपनी मातृ भाषा में बोलने में हिचकिचाते हैं।

आज हम अंग्रेजों के गुलाम नहीं हैं, फिर भी अंग्रेजियत के गुलाम जरूर हैं और इस तरह आज आम आदमी का झुकाव अंग्रेजी भाषा की तरफ है, आज हमारी शिक्षा पद्धति में, शासन तंत्र में अंग्रेजी की ही झलक मिलती है।

आज हम अंग्रेजी भाषा बोलने में, अंग्रेजी वेशभूषा में रहना अपना गौरव समझते हैं, 1947 के बाद हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के बाद भी हम उसे राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर नहीं बैठा पाए हैं।

प्रश्न 4. भारतीय मध्यवर्ग ने अंग्रेजों से कौन-सी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात सीखी?

उत्तर–स्वतंत्रता आन्दोलन के समय भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था और एक राज्य अथवा रियासत के लोगों के लिए उनका राज्य ही देश था और उनकी राष्ट्रभक्ति भी वहीं तक सीमित थी, 1757 के बाद अंग्रेजों ने अपने शासन के सुदृढ़ होने के साथ-साथ विभिन्न रियासतों में बंटे भारत को एक राजनीतिक इकाई में समेटना शुरू किया। इससे सामंती भारत के आधुनिक भारत बनने की प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमे सभी राज्यों और रियासतों के समन्वित रूप में भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखा और समझा जा सकता था। औपनिवेशिक शासन के अधीन राष्ट्र बनने की यह प्रक्रिया घटित होने पर भी इसने भारतीयों को यह एहसास कराना आरंभ कर दिया कि वे एक राष्ट्र के नागरिक हैं और उनके हित आपस में एक-दूसरे से जुड़े हैं। मध्यवर्ग में सबसे पहले यह भावना उभरी, जिनमें से अधिकांश नई अंग्रेजी शिक्षा जमींदार परिवारों से सम्बद्ध थे।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com